परमेश्वर को जानना: भाग II

टिप्पणियाँ

परमेश्वर को जानना II: पाठ्यक्रम

कक्षा #१:

I. परमेश्वर को जानना II का परिचय।
II. परमेश्वर की सदृशता।
III. परमेश्वर को जानने में चार प्राथमिक क्रियाएँ: परिचय।

कक्षा #२:

III. परमेश्वर को जानने में चार प्राथमिक क्रियाएँ। (जारी।)
IV. परमेश्वर को जानने में अनुशासन:
   क. परमेश्वर को जानने के लिए निरंतरता की आवश्यकता है।
   ख. परमेश्वर को जानने के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

कक्षा #३:

IV. परमेश्वर को जानने में अनुशासन:
   ग. निरंतरता और प्रतिबद्धता का फल।
      ऐतिहासिक उदाहरण।
V. परमेश्वर पर निर्भरता का संकट:
   क. निर्भरता का संकट क्या है?
   ख. निरंतरता।

कक्षा #४:

V. परमेश्वर पर निर्भरता का संकट:
   ग. प्रतिफल।
   घ. घनिष्ठ सम्बन्ध।
   ङ. गोपनीयता।
   च. महत्व।

कक्षा #५:

V. परमेश्वर पर निर्भरता का संकट:
   च. महत्व। (जारी।)
   छ. अधीनता।
   ज. निष्कर्ष। परीक्षा।

टिप्पणियाँ

परमेश्वर को जानना II: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) तीन पदों का प्रयोग करते हुए, इसके संदर्भ की व्याख्या करके परमेश्वर की सदृशता के सार की व्याख्या करें (पृष्ठ ५४, ५५)।

२) यूह. १५:५ और नीति. ३:५, ६ का प्रयोग करते हुए "परमेश्वर पर निर्भरता के संकट" का अर्थ स्पष्ट करें (पृष्ठ ६८-७०)।

३) परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में घनिष्ठता पर चर्चा करें (पृष्ठ ७५-७७)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की बाइबल आधारित सदृशता को परिभाषित करें (पृष्ठ ५४, ५५)।

२) परमेश्वर को जानने में चार प्राथमिक क्रियाओं की सूची बनाएँ और उन पदों की जिन से सूची बनती है (पृष्ठ ५७)।

३) दो पदों का संदर्भ लें जो प्रार्थना में निरंतरता को बढ़ावा देते हैं (पृष्ठ ६२)।

४) परमेश्वर को खोजने का सबसे बड़ा प्रतिफल क्या है? दो पदों को सम्मिलित करें (पृष्ठ ७३-७४)।

५) दो या तीन वाक्यों में इस प्रश्न का उत्तर दें: हमें मरियम के रवैये की थोड़ी अधिक और मार्था के रवैये की थोड़ी कम आवश्यकता क्यों है (पृष्ठ ७९)?

६) परमेश्वर को जानने के महत्व को दर्शाने के लिए मर. ३:१४ का उपयोग करें (पृष्ठ ८१)।

परमेश्वर को जानना: भाग II

टिप्पणियाँ

I. परमेश्वर को जानना II का परिचय।

क. प्रत्येक पुरुष की इच्छा।

१. अन्यजाति दुनिया हमेशा इस सोच द्वारा डराई गई है कि परमेश्वर को नहीं जाना जा सकता है। ज़्यादा से ज़्यादा, मनुष्य उसकी खोज कर सकता है, परन्तु वह हमेशा एक रहस्य बना रहेगा।

क. प्लेटो के शब्द आम मनुष्य की हताशा का प्रतिनिधित्व करते हैं: "ब्रह्मांड के निर्माता और पिता की जाँच करना और उसको खोजना कठिन है। और यदि कोई उसे खोज लेता है, तो उसे उन शब्दों में व्यक्त करना असंभव होगा जो सभी समझ सकते हैं।"[१]

ख. अरस्तू ने परमेश्वर के विषय में बोला कि वह "सभी लोगों द्वारा लेने वाले स्वप्न का सर्वोच्च कारण है और किसी भी व्यक्ति द्वारा ज्ञात नहीं है।"[२]

२. प्राचीन संसार को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि कोई परमेश्वर या देवता हैं। हालाँकि, यह माना जाता था कि यदि देवताओं का अस्तित्व है भी है तो उन्हें जाना नहीं जा सकता। उनका यह भी मानना था कि देवता कभी - कभी ही मानवजाति में रुचि रखते थे।

क. मसीह के बिना संसार में, परमेश्वर एक रहस्य हैं।

ख. वह एक ऐसी शक्ति हैं जो इच्छा करने योग्य हैं, लेकिन कभी जानी नहीं गई।

चर्चा विषय

अपने स्वयं के अनुभवों में, क्या आपने ऐसे लोगों को देखा है जो अन्य धर्मों और दर्शनशास्त्रों से जुड़े हुए हैं, जो लगातार परमेश्वर, या कई देवताओं को जानने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु कभी भी उस संबंध को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हुए? एक समय पर, क्या आप में से कुछ वह लोग थे?

टिप्पणियाँ

ख. इस पाठ्यक्रम की सामग्री।

१. इस पाठ्यक्रम में प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा का अध्ययन जारी है। अर्थात, परमेश्वर को जानने की इच्छा। क्या परमेश्वर को जाना जा सकता है? यदि हाँ, तो उन्हें कैसे जाना जा सकता है?

क. इन प्रश्नों का उत्तर धर्मविज्ञान के दृष्टिकोण से "परमेश्वर को जानना।" पाठ्यक्रम में दिया गया था। हमने परमेश्वर के ज्ञान की शिक्षा का अध्ययन किया, फिर एक धर्मविज्ञान का गठन किया कि परमेश्वर को कैसे जाना जाए।

ख. यह पाठ्यक्रम परमेश्वर को जानने के अगले चरण की ओर बढ़ता है, जो कि व्यावहारिक क्षेत्र है। यह पाठ्यक्रम निम्न प्रश्न पर काम करता है, "परमेश्वर को बेहतर रीति से जानने के लिए हम क्या कर सकते हैं?"

२. इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हम निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करेंगे:

क. परमेश्वर की सदृशता।

ख. परमेश्वर को जानने की चार प्राथमिक क्रियाएँ।

ग. परमेश्वर को जानने में अनुशासन।

घ. परमेश्वर के साथ "निर्भरता का संकट"।

II. परमेश्वर की सदृशता।

क. परमेश्वर की सदृशता क्या है?

१. परमेश्वर को जानना परमेश्वर के समान होना है। इसलिए, परमेश्वर को जानने के अध्ययन में सदृशता की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण है।

२. तथापि, हमें सदृशता की बाइबल आधारित समझ प्राप्त करनी चाहिए।

क. प्रेरित पौलुस ने मसीहियों को मसीह की सदृशता करने के लिए प्रोत्साहित किया। पौलुस ने विश्वासियों को उसकी सदृशता करने और उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जैसे कि उसने मसीह की सदृशता की और उनका अनुसरण किया (देखें १ कुरिं. ४:१६ और १ कुरिं. ११:१)।

ख. पौलुस ने अक्सर विश्वासियों को उन विश्वासियों की सदृशता करने के लिए प्रोत्साहित किया जिनके जीवन और विश्वास ने प्रभु की सदृशता की (१ थिस्स. १:६, २:१४; इब्रा. ६:१२, १३:७)।

टिप्पणियाँ

ग. हालाँकि, एक उदाहरण की सदृशता करने की पौलुस की समझ का अर्थ यह नहीं है कि एक कोड या नियमों की सूची है जिसे स्मरण किया जाना चाहिए और उसका पालन किया जाना चाहिए। वास्तव में, इस प्रकार की प्रक्रिया में मसीही व्यवहार का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जाता है।

घ. सदृशता परमेश्वर के प्रति एक नए रवैये का परिणाम है। यह स्वयं को किसी **नियम** के पालन में नहीं, बल्कि **संपूर्ण जीवन शैली** के प्रति प्रतिबद्धता में व्यक्त करता है।

ङ. सदृशता का विचार मसीह पर केंद्रित है, जो अनुयायी को उनकी सदृशता करने में सक्षम बनाता है। वह मनुष्य नहीं हैं जो परमेश्वर की समानता में सदृश सिद्धता के स्तर को प्राप्त करते या अर्जित करते हैं (इफि. ५:१ देखें)।

१) मनुष्य अपनी क्षमता, शक्ति या कार्यों में परमेश्वर के समान नहीं हो सकता।

२) केवल जब मनुष्य यीशु को अपने द्वारा कार्य करने की अनुमति देता है, तभी वह उस उदाहरण का सदृश बन सकता है।

क) यह "काम" या "प्रयास" नहीं है जिसके परिणामस्वरूप और अधिक उसके जैसा बनते हैं।

ख) इसके बजाय, यह उनकी छवि में बनने की प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप और अधिक उसके समान बनते हैं। यह उसके साथ संबंध और आज्ञाकारिता में चलने के द्वारा किया जाता है।

ग) यह एक "प्रयास" नहीं, बल्कि समर्पण है जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के सदृश बनते हैं।

घ) परमेश्वर की सदृशता संबंध और आज्ञाकारिता का परिणाम है जो तुलना में समानता उत्पन्न करने वाले कुछ कार्यों के परिणाम से अधिक है।

३) परमेश्वर की सदृशता उनके प्रति समर्पण करना है, क्योंकि वास्तव में परमेश्वर की सदृशता का एकमात्र तरीका परमेश्वर को अपने भीतर रखना है। आपका जीवन इस अर्थ में सदृशता बन जाता है कि आपका जीवन मसीह के जीवन की निरंतरता हो जाता है। आपका में मसीह होना परमेश्वर की सदृशता का एकल वास्तविक तरीका है।

४) इस प्रकार, यीशु के साथ संबंध और उसकी आज्ञाकारिता परमेश्वर की सदृशता के दो मुख्य प्रकटीकरण बन जाते हैं।

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

पिछली अवधारणाओं का उपयोग इस बात पर चर्चा करने के लिए करें कि मसीह के माध्यम से परमेश्वर के सदृश बनने का क्या अर्थ है।

ख. परमेश्वर की सदृशता के लिए क्या संदर्भ है?

१. परमेश्वर की सदृशता के संदर्भ हमेशा निम्नलिखित विषयों में होते हैं।

क. स्वयं को मारना/दुःख उठाना/अपने अधिकारों का त्याग करना।

१) यह समझ में आता है यदि हम स्मरण रखें कि परमेश्वर के सदृश बनने के लिए हमें अवश्य परमेश्वर को अपने जीवन को नियंत्रित करने की अनुमति देनी चाहिए।

२) इस प्रकार, हमें स्वयं को मारना चाहिए, सुसमाचार हेतु कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए, और खोए हुओं को जीतने के लिए अपने अधिकारों को त्यागना चाहिए।

ख. "अन्य" अभिविन्यस्त होना।

१) यह समझ में आता है क्योंकि परमेश्वर के सदृश बनना वास्तव में मुझमें मसीह के जीवन की निरंतरता है (गला. २:२०), और मसीह का जीवन दूसरों के लिए जिया गया जीवन था (मर. १०:४५)।

२) इस प्रकार, हमें दूसरों के प्रति अभिविन्यस्त होना चाहिए, या दूसरों की सेवा करने का जीवन जीना चाहिए।

चर्चा विषय

निम्नलिखित पदों और प्रत्येक पद के संदर्भ का अध्ययन करें:
१ कुरिं. ४:१६; १ कुरिं. ११:१; इफि. ५:१; १ थिस्स. १:६; १ थिस्स. २:१४; और २ थिस्स. ३:९।

हमें सदृश बनने की अवधारणा को कैसे समझना चाहिए, इसके क्या आशय हैं?

परमेश्वर को जानना: भाग II

टिप्पणियाँ

III. परमेश्वर को जानने में चार प्राथमिक क्रियाएँ।

क. परिचय।

१. परमेश्वर को जानने के अभ्यास से संबंधित अध्ययन में उपयोग करने के लिए संभव: सबसे अच्छा पद प्रेरितों के काम २:४२ है। प्रेरितों के काम २:४२ में हमारे पास उन चार क्रियाओं की एक सूची है जिनका उपयोग कलीसिया के पहले सदस्यों द्वारा परमेश्वर की खोज में किया गया था।

क. शिक्षण (हम इसे "बाइबल अध्ययन" कह सकते हैं)।

ख. संगती।

ग. रोटी तोड़ना (या "स्तुति और आराधना" क्योंकि यहाँ यूनानी शब्द "युहरिस्ट" है जिसका अर्थ है "धन्यवाद देना")।

घ. प्रार्थना।

२. हम परमेश्वर को जानने में इन चार प्राथमिक क्रियाओं में से प्रत्येक का संक्षेप में अध्ययन करेंगे। प्रत्येक क्रिया का अधिक विस्तृत अध्ययन अन्य पाठ्यक्रमों में प्रस्तुत किया गया है।

ख. बाइबल अध्ययन।

१. बाइबल का प्रेम।

क. बाइबल का १२०० से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। प्रत्येक वर्ष यह दुनिया में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे भी उसके वचन से भी प्रेम करेंगे।

1) परमेश्वर के लिखित वचन, बाइबल का उद्देश्य परमेश्वर के जीवित वचन, प्रभु यीशु मसीह को प्रकट करना है।

2) बाइबल से प्रेम करना मसीह से प्रेम करना है। मसीह से प्रेम करना बाइबल से प्रेम करना है।

टिप्पणियाँ

ख. बाइबल मात्र बस एक और किताब नहीं है। यह परमेश्वर का वचन है। यह जीवित है (इब्रा. ४:१२)।

१) परमेश्वर का उद्देश्य हमें यीशु मसीह के स्वरूप में बदलना है, जो कि वचन है (रोमि. ८:२८, २९; यूह. १:१)।

२) ऐसा करने के सबसे प्रभावयुक्त तरीकों में से एक है परमेश्वर के वचन को पढ़ना और उसका अध्ययन करना। परमेश्वर के वचन में सामर्थ है। यह हमें बदल सकता है। यह परमेश्वर को जानने में हमारी सहायता कर सकता है।

३) यदि आप ऐसा मानते हैं और यदि आपकी सबसे बड़ी इच्छा परमेश्वर को जानने और उसके स्वरूप में परिवर्तित होने की है, तो आप बाइबल पढ़ने और उसका अध्ययन करने के लिए प्रेरित होंगे।

२. बाइबल अध्ययन और परमेश्वर को जानना।

क. यदि हम परमेश्वर के वचन को अपने में रखते हैं, तो हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं करेंगे (देखें भज. ११९:११)।

१) यह हमारा पाप है जो हमें परमेश्वर से अलग करता है।

२) बाइबल हमें पाप न करने, और इसलिए परमेश्वर से अलग न होने में सहायता कर सकती है। अर्थात्, बाइबल हमें परमेश्वर को जानने में सहायता कर सकती है (देखें रोमि. ६:२३ और यशा. ५९:२)।

ख. बाइबल हमें धोती है। अर्थात्, यह हमें साफ़, शुद्ध या पवित्र करती है (देखें इफि. ५:२६)।

क) शुद्ध परमेश्वर को देखते हैं।

ख) बाइबल हमें शुद्ध बना सकती है। अर्थात्, बाइबल हमें परमेश्वर को देखने या जानने में सहायता कर सकती है (देखें मत्ती ५:८)।

ग. बाइबल हमें परमेश्वर को जानना आरंभ करने में सहायता करती है (देखें १ पत. १:२३ और रोमि. १:१६)।

घ. बाइबल हमें परमेश्वर के विषय में हमारे ज्ञान में बढ़ने में सहायता करती है (देखें १ पत. २:२)।

टिप्पणियाँ

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

किन तरीकों से बाइबल का अध्ययन करने के द्वारा आप परमेश्वर को बेहतर तरीके से जान पाए हैं और उनके साथ एक गहरे प्रेम संबंध में बढ़े हैं?

ध्यान दें: बाइबल का अध्ययन करने का बेहतर तरीका सीखने के लिए, खण्ड तीन में बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम को देखें।

ग. संगती।

१. मैं परमेश्वर की संतान को बेहतर रीति से जानकर उसको बेहतर जान सकता हूँ।

२. यह सच है क्योंकि परमेश्वर अपनी संतान में वास करते हैं। इस प्रकार, कुछ हद तक, अन्य मसीहियों के साथ संगति परमेश्वर के साथ संगति है, क्योंकि मसीह उनमें रहते हैं (गला. २:२०)।

३. मसीह में भाइयों और बहनों के साथ संगति और परमेश्वर के साथ संगति वचन में दृढ़ता से जुड़ी हुई है (देखें १ यूह. १:३)।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

किस प्रकार अन्य विश्वासियों के साथ संगति आपके मसीही विकास में एक सकारात्मक पहलू रही है और आपको परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानने के लिए प्रेरित किया है?

ध्यान दें: संगती की अवधारणा का और अध्ययन करने के लिए सम्बन्ध पाठ्यक्रम के खण्ड दो में पाए जाने वाले कलीसिया की संगती को देखें।

घ. स्तुति और आराधना।

१. प्रेरितों के काम २:४२ में "रोटी तोड़ना" प्रभु-भोज लेने को संदर्भित करता है। प्रभु भोज का सार यह है कि यह धन्यवाद, या स्तुति और आराधना का धार्मिक अनुष्ठान है। वास्तव में यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द युहरिस्ट का अर्थ है "धन्यवाद देना।" स्तुति और आराधना के द्वारा हम परमेश्वर के पास जा सकते हैं और हम उसे बेहतर रीति से जान सकते हैं (देखें भज. ९५:२-६ और भज. २२:३)।

२. स्तुति परमेश्वर की महानता की प्रतिक्रिया है। यह कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है (भज. ६३:३)। स्तुति परमेश्वर की बड़ाई करना है (भज. १०६:४७)।

३. स्तुति का जीवन चार पहलुओं से विकसित होता है।

क. हम धन्यवाद देने या मौखिक प्रशंसा के माध्यम से स्तुति का जीवन विकसित करते हैं (देखें फिलि. ४:६; १ थिस्स. ५:१८; और भज. ५०:१४,२३)।

ख. हम परमेश्वर की आराधना शब्दों में करके और उन्हें मान्यता देकर स्तुति का जीवन विकसित करते हैं (देखें भज. ६३:३; १थिस्स. ५:१६; और भज. १४५:१, २)।

ग. हम परमेश्वर के लिए गाकर स्तुति का जीवन विकसित करते हैं (देखें भज. १०५:२; भज. १००:२; और इफि. ५:१९)।

घ. हम परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करने के द्वारा स्तुति का जीवन विकसित करते हैं (देखें फिलि. ३:१०; और भज. २७:४)।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

स्तुति और आराधना के जीवन ने किस प्रकार आपको परमेश्वर के और करीब आने के लिए प्रेरित किया है?

ध्यान दें: स्तुति और आराधना के अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए आप सम्बन्ध के खण्ड दो में पाए जाने वाले स्तुति और आराधना पाठ्यक्रम का सन्दर्भ ले सकते हैं।

ङ. प्रार्थना।

१. प्रार्थना को बड़े पैमाने पर परमेश्वर से बात करने और सुनने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रार्थना के माध्यम से हम किसी भी क्षण परमेश्वर के साथ सीधी बातचीत कर सकते हैं।

२. प्रार्थना के पहलू (इफि. ६:१८ देखें)।

क. हमें नित्य प्रार्थना करनी चाहिए (रोमि. १२:१२)।

ख. हमें अलग-अलग तरीकों से प्रार्थना करनी चाहिए (मत्ती ६:९-१३)।

ग. हमें गहराई से प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब ५:१६)।

घ. हमें संवेदनशीलता के साथ प्रार्थना करनी चाहिए (मत्ती २६:४१; कुलु. ४:२)।

ङ. हमें दृढ़ता के साथ प्रार्थना करनी चाहिए (भज. ५७:७; लूका ११:८, ९; लूका १८:१-८)।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

वर्णन करें कि आपके प्रार्थना जीवन में वृद्धि या कमी ने परमेश्वर के साथ आपके संबंध को कैसे प्रभावित किया है।

ध्यान दें: अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए, सम्बन्ध, खण्ड दो में पाए जाने वाले प्रार्थना और उपवास पाठ्यक्रम को देखें।

टिप्पणियाँ

IV. परमेश्वर को जानने में अनुशासन।

क. परमेश्वर को जानने के लिए निरंतरता की आवश्यकता होती है।

१. परमेश्वर को जानने की चार मूलभूत क्रियाओं में से प्रत्येक में उनके बाइबल आधारित निर्देशों के भीतर निरंतरता और नियमितता की भावना सम्मिलित है। प्रत्येक मामले में, बाइबल "निरंतर", "दिन और रात" और "दिन-प्रतिदिन" जैसे वाक्यांशों का उपयोग करती है।

क. बाइबल अध्ययन (२ तीमु. २:१५ और भज. १:२ देखें)।

ख. संगती (देखें प्रेरितों के काम २:४६ और १ यूह. १:७)।

ग. स्तुति और आराधना (देखें भज. ६३:५, ६; भज. ३५:२८; ७१:६; ७२:१५; ११९:६२, १६४; १४६:२; और प्रेरितों के काम १६:२५)।

घ. प्रार्थना (देखें १ थिस्स. ५:१७; और इफि. ६:१८; और दानि. ६:१० में दानिय्येल का उदाहरण)।

२. परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए। हमें यत्न से परमेश्वर को खोजना चाहिए (नीति. ८:१७)।

क. सामान्य अर्थों में हमें निरंतरता का प्रयास करना चाहिए। अर्थात्, हमें अपने मन को पूरे दिन परमेश्वर की बातों पर लगाए रखने में निरंतर बने रहना चाहिए (कुलु. ३:१, २)।

ख. हमें विशिष्ट तरीकों में भी निरंतर होना चाहिए। अर्थात्, हमें परमेश्वर के साथ अपने भक्तिपूर्ण समय में निरंतर होना चाहिए। हमें दिन के नियोजित समय पर परमेश्वर को खोजने की अच्छी आदतें विकसित करनी चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

आप किन तरीकों से परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते की निरंतरता को बढ़ा सकते हैं? ऐसी कौन सी चीजें हैं जो आपको रोकती हैं? किन चीज़ों ने अतीत में आपको अधिक निरंतर होने में सहायता दी है?

ख. परमेश्वर को जानने के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

१. जब हम निरंतरता की बात करते हैं तो हमें प्रतिबद्धता की भी बात करनी चाहिए। प्रतिबद्धता के बिना निरंतरता संभव नहीं है। निरंतरता अनुशासन का प्रकटीकरण है। प्रतिबद्धता अनुशासन की नींव और प्रेरणा है।

२. हम परमेश्वर को खोजने के व्यावहारिक प्रयासों के प्रति प्रतिबद्ध होने का निर्णय ले सकते हैं। हम परमेश्वर को जानने का "निर्णय" नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर ही स्वयं को हम पर प्रकट कर सकते हैं।

क. यद्यपि परमेश्वर को जानने की इच्छा हमारे भीतर बनी रहती है, हम अपने कार्यों या अपनी इच्छा से उन्हें नहीं जान सकते। परमेश्वर स्रोत हैं। हमारी स्वेच्छा स्रोत नहीं हैं।

ख. हालाँकि, हम सहयोग कर सकते हैं, जिससे हमारे लिए परमेश्वर के स्वयं के प्रकाशन को प्राप्त करना संभव हो जाएगा। हम एक समर्पित और अनुशासित तरीके से परमेश्वर को खोजने करने का निर्णय कर सकते हैं और वास्तव में करना भी चाहिए।

१) हमारी प्रेरणा परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम और इच्छा होनी चाहिए।

२) हमें विश्वास के द्वारा कार्य करना चाहिए।

क) हमें यह समझने की आवश्यकता नहीं है कि हम कैसे यीशु की छवि में परिवर्तित हो रहे हैं या हम कैसे परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान में बढ़ रहे हैं। हमें केवल इस विश्वास में कार्य करना चाहिए कि परमेश्वर हमें बदल रहे हैं और हम यीशु के करीब और करीब बढ़ रहे हैं।

ख) यह परमेश्वर हैं जो ऐसा करते हैं। हम स्वयं इसे नहीं कर सकते हैं।

टिप्पणियाँ

३. हम बाइबल पढ़ने के एक कार्यक्रम को स्थापित करने का निर्णय ले सकते हैं। हम प्रभु की स्तुति और आराधना करने का निर्णय ले सकते हैं। हम अन्य मसीहियों के साथ समय बिताने का निर्णय ले सकते हैं। हम प्रार्थना करने का निर्णय ले सकते हैं। एक दैनिक कार्यक्रम की योजना बनाने का प्रयास करें।

क. सुबह आप परमेश्वर के साथ एक घंटा बिता सकते हैं।

१) आप ३० मिनट प्रार्थना कर सकते हैं।

२) आप १५ मिनट स्तुति और आराधना कर सकते हैं।

क) प्रभु के लिए गाओ। यदि आप सक्षम हैं तो गिटार या अन्य वाद्य यंत्र का प्रयोग करें।

ख) स्तुति के गीत सुनें और साथ में गाएं।

ग) प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ जो आपके हृदय से निकलता है (इफि. ५:१९)।

३) आप १५ मिनट अपनी बाइबल पढ़ सकते हैं।

क) पुराने नियम से दो अध्याय पढ़ें।

ख) नए नियम से एक अध्याय पढ़ें।

ख. दोपहर में, आप किसी मसीही के साथ दोपहर का भोजन करने की योजना बना सकते हैं। आप दोपहर के भोजन के दौरान संगती समय का आनंद ले सकते हैं।

ग. शाम को सोने से पहले आप ३० मिनट परमेश्वर के साथ बिता सकते हैं। संभवतः आप प्रार्थना कर सकते हैं, बाइबल पढ़ सकते हैं, और उस दिन के लिए परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं।

४. कुंजी उसके लिए प्रतिबद्ध होना है, जो कुछ भी आप एक कार्यक्रम के रूप में स्थापित करते हैं। यदि प्रतिदिन १० मिनट या ३ घंटे प्रभु के साथ बिताना है, तो सबसे महत्वपूर्ण बात प्रतिबद्ध होना है। जब परमेश्वर थोड़े समय में भी आपकी प्रतिबद्धता को देखता है, तो वह आपको उसके साथ अधिक समय बिताने के लिए प्रेरित करेगा (लूका १६:१०)।

चर्चा विषय

क्या आप परमेश्वर को जानने की प्राथमिक क्रियाओं का अभ्यास करते हुए समय बिताने की निरंतर योजना के लिए प्रतिबद्ध हैं?

प्रतिबद्धता की कमी को दूर करने में कौन सी चीजें आपकी सहायता करेंगी?

टिप्पणियाँ

अपना उदाहरण लिखें:

ग. निरंतरता और प्रतिबद्धता का फल।

१. कुछ लोग दो सप्ताह में पूरी बाइबल पढ़ने का प्रयास करते हैं। अधिकतर, वे आरम्भ करते हैं परन्तु समाप्त नहीं करते। अन्य लोग अनुशासन का उपयोग करते हैं। वे निरंतर और प्रतिबद्ध होते हैं। वे प्रतिदिन तीन अध्याय पढ़ते हैं और एक वर्ष में पूरी बाइबल पढ़ लेते हैं।

२. यह गणना करना आश्चर्यजनक है कि निरंतरता और प्रतिबद्धता के संयोजन का फल क्या है।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख पर विचार करें, जो बाइबल अध्ययन के मामले में इस बिंदु को दिखाता है।

दैनिक बाइबल अध्ययन (प्रति दिन)	जितनी बार बाइबल पढ़ी गयी (प्रति वर्ष)	५ मिनट प्रति पाठ की दर से पढने हेतु लिया गया समय (प्रति दिन)	१० मिनट प्रति पाठ की दर से पढने हेतु लिया गया समय (प्रति दिन)
३ अध्याय	१	१५ मिनट	३० मिनट
७ अध्याय	२	३५ मिनट	७० मिनट
१० अध्याय	३	५० मिनट	१०० मिनट
१३ अध्याय	४	६५ मिनट	१३० मिनट
१६ अध्याय	५	८० मिनट	१६० मिनट

टिप्पणियाँ

लेखक की टिप्पणी:

यदि आप प्रतिदिन एक घंटा बाइबल पढ़ने के लिए स्वयं को अनुशासित कर सकते हैं, तो आप पूरी बाइबल को प्रत्येक वर्ष तीन बार पढ़ सकते हैं। अर्थात, आप एक दशक में पूरी बाइबल को ३० बार पढ़ सकते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो निश्चित रूप से आप में परमेश्वर का वचन होगा। आप परमेश्वर को अच्छी रीति से जानते होंगे और उसकी छवि में बहुत अधिक बदल जाएंगे।

प्रतिदिन एक घंटा बाइबल पढ़ने की योजना बनाना अवास्तविक नहीं है। कई लोगों के लिए इसका सीधा सा अर्थ उनके टेलीविजन देखने के समय को आधा करना होगा।

यदि आप स्वयं को प्रतिदिन एक घंटे के लिए नया नियम पढ़ने के लिए अनुशासित कर सकते हैं, तो आप पूरे नए नियम को प्रति वर्ष १४ बार पढ़ सकते हैं। अर्थात्, आप एक दशक में १४० बार नया नियम पढ़ सकते हैं। आप नए नियम के विशेषज्ञ हो जाएँगे। इसके अलावा, परमेश्वर को जानने के संबंध में उस अनुशासन के फल की गणना नहीं की जा सकती है।

अपनी टिप्पणी लिखें:

टिप्पणियाँ

घ. अनुशासन के पाठ।

अनुशासन का एक ऐतिहासिक उदाहरण:

मेथोडिस्ट आंदोलन के संस्थापक जॉन वेस्ली ने परमेश्वर को जानने के संबंध में अनुशासन का जीवन व्यतीत किया। (कई उदाहरण चुने जा सकते थे परन्तु वेस्ली अनुशासन के एक अच्छे उदाहरण का प्रतिनिधित्व करते हैं)।

मेथोडिस्ट बेदारी आरम्भ होने से पूर्व, वेस्ली ने होली क्लब नामक एक समूह का गठन किया था। परमेश्वर की खोज में एक अनुशासित जीवन जीने की इच्छा के तहत इस क्लब का आयोजन किया गया था।

निम्नलिखित समय-सारणी होली क्लब के सदस्य के जीवन में एक विशिष्ट दिन को दर्शाती है:

१) प्रातः ५:०० बजे उठें।
प्रातः ८:०० बजे तक भजन गाएँ और वचन पढ़ें।
प्रातः ८:०० बजे से प्रातः ९:०० बजे तक प्रार्थना करें।

२) प्रत्येक सप्ताह पाँच रातें वे संगति के लिए एकत्रित होते थे। उन्होंने एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया और धार्मिक पुस्तकें पढ़ीं।

३) प्रत्येक रात, ६:०० से सायं: ७:०० बजे तक वे गरीबों की विनतियों के लिए प्रार्थना करते थे। इस दौरान उन्होंने अगले दिन के लिए सेवकाई की योजना भी बनाई।

१. अनुशासन एक विधि है, लक्ष्य नहीं।

क. होली क्लब के सदस्य अनुशासित थे, परन्तु वह लक्ष्य नहीं था। यह अनुशासन के लिए नहीं था।

ख. अनुशासित रहना हमारी प्रेरणा नहीं है। हमारी प्रेरणा परमेश्वर का प्रेम और उन्हें जानने की इच्छा है।

२. अनुशासन का जीवन जीने के लिए हमें अपने दिमाग को नया करना होगा।

क. परमेश्वर को खोजने के द्वारा हमारी दैनिक क्रियाओं और उपयुक्तताओं में इस प्रकार से एक संक्रमण होना चाहिए जो सही बैठता हो।

ख. हमारी दैनिक क्रियाओं को परमेश्वर की खोज वाले जीवन में सही बैठना चाहिए।

टिप्पणियाँ

३. परमेश्वर को खोजने के अनुशासित जीवन की वास्तविकता दूसरों की सेवा और उनसे प्रेम करने के अनुशासित जीवन की ओर ले जाएगी।

क. यह दो सबसे बड़ी आज्ञाओं की प्रगति के अनुरूप है (देखें मर. १२:३०, ३१)।

ख. यह होली क्लब में जो हुआ उसके अनुरूप है। उन्होंने जल्द ही अस्पतालों और जेलों में जाकर लोगों से मिलने और उनकी सेवा करने की एक अनुशासित समय-सारणी को आरम्भ किया।

ङ. परमेश्वर पर निर्भरता का संकट।

क. निर्भरता का संकट क्या है?

१. यूह. १५:५ में, यीशु ने कहा... "मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

क. यदि यह कथन सत्य है, तो आपके जीवन का प्रत्येक क्षण मसीह पर निर्भरता का संकट है।

१) हालाँकि, बहुत से लोग केवल आपात स्थिति (एक कथित संकट) के समय में ही परमेश्वर के पास आते हैं, क्योंकि वह तब होता है जब वे अपनी लाचारी की अत्यावश्यकता को **महसूस** करते हैं।

२) जीवन की वास्तविकता यह है कि हर क्षण हमें परमेश्वर पर निर्भर छोड़ देता है और उसके बिना हमारी पूरी लाचारी को दर्शाता है।

क) इस अर्थ में प्रत्येक क्षण निर्भरता का संकट है।

ख) हमें हर क्षण परमेश्वर के पास आना चाहिए।

ग) जब हम अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को संकट के रूप में देखने लगते हैं, तो हमें परमेश्वर के साथ अपने संबंध में निर्भरता का संकट दिखाई देने लगता है।

टिप्पणियाँ

ख. आप जितना अधिक स्वयं को परमेश्वर के बिना लाचार के रूप में देखेंगे, उतना ही अधिक आप परमेश्वर की खोज करेंगे।

ग. ऐसा कहना "परमेश्वर, अपने साथ मेरा सम्बन्ध बढाएं," यह कहना है कि "परमेश्वर, इसके विषय में मेरी जागरूकता बढाएं कि मैं आपके बिना कितना लाचार हूँ। आपके लिए मेरी आवश्यकता के विषय में मेरी जागरूकता बढाएं!"

लेखक का उदाहरण:

एक बार एक राजा था जिसका एक बेटा था, उसे वह सालाना भत्ता देता था। वह प्रत्येक वर्ष के पहले दिन उसे पूरे भत्ते का भुगतान कर देता था। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, राजा को एहसास होने लगा कि वर्ष के पहले दिन ही उसने अपने बेटे को देखा था। इसलिए राजा ने भुगतान की समय-सारणी बदल दी। वह अपने बेटे को दिन-प्रतिदिन भुगतान करने लगा। उसने उसे उतना भुगतान दिया जो एक दिन के लिए पर्याप्त था। राजा प्रतिदिन अपने बेटे को देखने लगा!

अपना उदाहरण लिखें:

२. दुर्भाग्यवश, कुछ मसीहियों के पास परमेश्वर के विषय में "ईश्वरवादी" दृष्टिकोण है। इसका अर्थ यह है कि वे ऐसे कार्य करते हैं जैसे कि परमेश्वर बहुत दूर हैं और हमारे दैनिक जीवन के विषय में चिंतित नहीं हैं। वे परमेश्वर को बार-बार परेशान करना नहीं चाहते। हालाँकि, परमेश्वर कहानी में राजा के समान हैं। वह ऐसा होने देते हैं ताकि हमें उनकी निरंतर आवश्यकता हो, ताकि हम उनके साथ निरंतर संगति में रह सकें।

टिप्पणियाँ

कक्षा क्रिया:

यूह. १५:५ को फिर से देखें, फिर नीति. ३:५, ६ की जाँच करें (**सब** शब्द पर ध्यान दें)। "तू अपनी समझ का सहारा न लेना,

वरन् **सम्पूर्ण** मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके **सब** काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।"

यूह. १५:५ का सिद्धांत तार्किक रूप से नीति. ३:६ के सिद्धांत की ओर कैसे ले जाता है? (राजा की कहानी पर विचार करें और उस अनुप्रयोग पर जो सिखाया गया है)।

प्रत्येक क्षण हम परमेश्वर पर निर्भरता के संकट का अनुभव कर रहे हैं क्योंकि प्रत्येक क्षण हमें परमेश्वर की आवश्यकता है।

अब, यूह. १५:५ और नीति. ३:५, ६ का अधिक बारीकी से विश्लेषण करें। पिछले प्रश्न का उत्तर **कुछ भी नहीं** (यूहन्ना १५:५) और **सब** (नीतिवचन ३:५, ६) शब्दों के बीच संबंध के संदर्भ में दें।

लेखक की टिप्पणी:

परमेश्वर पर निर्भरता के संकट के छह अलग-अलग पहलू हैं।

अंग्रेजी भाषा में, हम संकट (crisis या क्राइसिस) शब्द के छह अक्षरों में से प्रत्येक का उपयोग निम्नलिखित छह पहलुओं को विकसित करने के लिए कर सकते हैं:

C onsistency. (कंसिस्टेंसी अर्थात निरंतरता)।
R eward. (रिवॉर्ड अर्थात प्रतिफल)।
I ntimacy. (इंटिमेसी अर्थात घनिष्ठता)।
S ecrecy. (सीक्रेसी अर्थात गोपनीयता)।
I mportance (इम्पोर्टेंस अर्थात महत्वता)।
S ubmission. (सबमिशन अर्थात अधीनता)।

यह अक्षरबद्ध शैली शिक्षण विधि, एक अलग पहलू को सिखाने के लिए प्रत्येक शब्द के पहले अक्षर का उपयोग करती है। हम समझते हैं कि यह अधिकांश अन्य भाषाओं में लागू नहीं होगा।

टिप्पणियाँ

ख. निरंतरता

१. फिर से, नीति. ३:५, ६ पढ़िए। **सब** शब्द की गंभीरता पर ध्यान दें।

क. **सब** का अर्थ है सब! परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध निरंतरता में होना चाहिए और उनमें हमारे जीवन का प्रत्येक क्षेत्र आना चाहिए।

ख. कुछ लोग कहते हैं कि इस प्रकार की सोच कट्टरता है (जिसका अर्थ है तर्कहीन और अवांछनीय तरीके से अति-उत्साही होना)। वे कहते हैं कि जो लोग सोचते हैं कि उन्हें सब कुछ यीशु को ध्यान में रखकर करना है, वे बस कट्टर हैं (यूह. १५:५ फिर से पढ़ें)। वे कहते हैं कि कट्टरपंथी पागल होते हैं।

१) तथापि, उसके अनुसार जो हमने अभी सीखा है, पागलपन की बात तो यीशु के बिना कुछ करने का प्रयास करना है (यूह. १५:५)।

२) नीतिवचन ३:५, ६ का पालन करना ही तार्किक है।

३) इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि, नीतिवचन ३:५, ६ का पालन न करना परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता है।

ग. वास्तव में हमें अपने मसीही जीवन में इस "कट्टरतावाद" की थोड़ी अधिक आवश्यकता है। हमें मसीह के लिए और अधिक मूर्खों की आवश्यकता है (देखें १ कुरिं. ४:१०)।

१) स्मरण रखें, यह पौलुस ही थे (जिन्होंने स्वयं को मसीह के लिए मूर्ख भी कहा था) जिन्होंने प्रार्थना के विषय में बात करते समय **हमेशा, सब,** और **निरन्तर** शब्दों का प्रयोग किया।

२) ऐसा कोई मसीही नहीं है जिनके पास जिनके जीवन में बहुत अधिक यीशु हैं!

लेखक का उदाहरण:

यीशु दूध के समान नहीं हैं। चिकित्सकों का कहना है कि दूध तब तक बहुत सेहतमंद होता है, जब तक आप इसका बहुत अधिक मात्रा में सेवन नहीं करते हैं। वे कहते हैं कि बहुत अच्छी चीज की अधिक मात्रा भी सेहतमंद नहीं है। यीशु दूध के समान नहीं है! आप उन्हें बहुत अधिक नहीं पा सकते हैं!

टिप्पणियाँ

अपना उदाहरण लिखें:

२. शुद्धिकरण को कई अलग-अलग तरीकों से वर्णित किया जा सकता है। इसका वर्णन करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में **निरंतरता**। शुद्धिकरण परमेश्वर के साथ संगति **से बाहर** कम समय बिताने, और अधिक समय परमेश्वर के साथ संगति **में** बिताने की प्रक्रिया है।

चर्चा विषय

परमेश्वर के साथ संबंध में शुद्धिकरण और निरंतरता के बीच संबंध पर चर्चा करने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें।

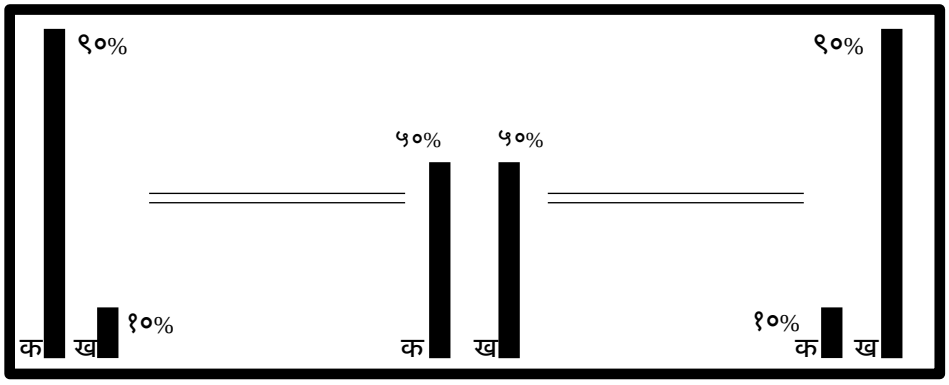

"क" = प्रत्येक दिन का समय प्रतिशत जो परमेश्वर के साथ नहीं बिताया जाता है
"ख" = प्रत्येक दिन का समय प्रतिशत जो परमेश्वर के साथ बिताया जाता है

परमेश्वर के साथ समय बिताना उन्हें **स्वीकार करना** है (नीति. ३:६)। जैसा कि भाई लॉरेंस कहेंगे, **यह उनकी उपस्थिति का अभ्यास करना है।**

शुद्धिकरण की प्रक्रिया परमेश्वर की उपस्थिति में अधिक से अधिक निरन्तर आगे बढ़ने की प्रक्रिया है। यह आरेख पर बाएँ से दाएँ जाना है।

टिप्पणियाँ

ग. प्रतिफल।

१. निरंतरता का वादा प्रतिफल है।

क. निरंतर परमेश्वर की खोज करने वालों को क्या प्रतिफल देने का वादा किया गया है (नीति. ३:५, ६ का फिर से अध्ययन करें)?

ख. इब्रा. ११:६ का अध्ययन करें।

१) क्या परमेश्वर अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देते हैं?

२) ध्यान दें कि विश्वास कैसे आवश्यक है।

क) विश्वास के बिना, हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते क्योंकि विश्वास के बिना, हम परमेश्वर के पास भी नहीं जा सकते हैं (ध्यान दें कि इब्रा. ११:६ का अध्ययन बताता है कि यह परमेश्वर के पास हमारा आना है जो उन्हें प्रसन्न करता है)।

ख) केवल विश्वास (जो अक्सर तर्क के विरुद्ध जाता दिखता है) उस पहाड़ पर चढ़ सकता था जिस पर मूसा परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए चढ़े थे।

ग) परमेश्वर ने मूसा को प्रतिफल दिया क्योंकि परमेश्वर "अपने खोजने वालों को प्रतिफल देते हैं।"

२. प्रतिफल क्या है?

क. भाई लॉरेंस, महान भिक्षु, जिन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर जीवन जीना सीखा, वह कहते हैं कि, "दुनिया में ऐसा कोई जीवन नहीं है जो परमेश्वर के साथ निरंतर बातचीत से अधिक मधुर और आनंदमय हो।"[३]

ख. भाई लॉरेंस के लिए परमेश्वर को खोजने का प्रतिफल परमेश्वर को और अधिक खोजने का अवसर और प्रेरणा थी। परमेश्वर के साथ संबंध रखने का प्रतिफल परमेश्वर के साथ अधिक से अधिक संबंध रखना है।

टिप्पणियाँ

कक्षा क्रिया:

भज. ७३:२८ का अध्ययन करें। भजनकार का "भला" या प्रतिफल क्या है?

व्य.१०:९ का अध्ययन करें। लेवी का "निज भाग" या प्रतिफल क्या है? स्मरण रखें, केवल लेवीय याजकों को ही मिलाप के तम्बू के क्षेत्र में प्रवेश करने की अनुमति थी (गिन. १८:१-७)।

लूका १८:३० का अध्ययन करें। प्रतिफल क्या है? अनन्त जीवन क्या है (देखें यूह. १७:३)?

ग. खोजने, जानने, या परमेश्वर के साथ संबंध रखने का प्रतिफल और अधिक खोजना, जानना या परमेश्वर के साथ संबंध रखना है (यह भी देखें १ इति. २८:९; मत्ती ७:७; याकू. ४:८; नीति. ३:३२, ३३ और रोमि. ६:२३), (स्मरण रखें कि यूह. १७:३ में अनन्त जीवन को कैसे परिभाषित किया गया है)। उत्प. १५:१ से, हम कह सकते हैं कि अब्राहम का सबसे बड़ा प्रतिफल परमेश्वर के साथ उनकी "सीधी बातचीत" थी।

चर्चा विषय

वर्णन करें कि कैसे आपने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के साथ अधिक समय बिताने के द्वारा प्रतिफल प्राप्त किए हैं।

टिप्पणियाँ

घ. घनिष्ठता।

१. "जानने" की बाइबल आधारित अवधारणा।

क. पुराने नियम में, "घनिष्ठता से जानने" के लिए इब्रानी शब्द "यादा" है।

१) जीवन में सबसे बड़ी चीज अनन्त जीवन है।

२) अनन्त जीवन परमेश्वर को जानना है।

ख. नए नियम में, "जानने" के लिए यूनानी शब्द (यूह. १७:३ में) "गिनोस्को" है।

१) इसका अर्थ है व्यक्तिगत अनुभवों या अनुभवात्मक रूप के माध्यम से "जानना"।

२) यह ज्ञान और संबंध के घनिष्ठ पहलू को भी दर्शा सकता है।

ग. परमेश्वर के साथ घनिष्ठता के पहलू को पुराने नियम के शब्द "यादा" में अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

१) नीति. ३:५, ६ की समीक्षा करें। **स्मरण** शब्द इब्रानी शब्द "यादा" का अनुवाद है।

२) उत्पत्ति ४:१ का अध्ययन करें। हम फिर से इब्रानी शब्द "यादा" पाते हैं। यह बहुत ही घनिष्ठ संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।

३) जब हम इन दो पदों के अध्ययन को जोड़ते हैं तो हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि परमेश्वर का वचन हमें दिखा रहा है कि परमेश्वर के साथ हमारा संबंध दिखावटी नहीं होना चाहिए।

४) इसके विपरीत, इसे सबसे घनिष्ठ संबंध के अनुरूप होने के रूप में वर्णित किया गया है जो मनुष्यों के बीच संभव है (शारीरिक यौन घनिष्ठता)।

क) हम कह सकते हैं कि बाइबल हमें परमेश्वर के साथ "आत्मिक संभोग" करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

ख) हमें उनके साथ घनिष्ठ रूप से एक होना है।

टिप्पणियाँ

ग) हमें उनके साथ एक होना है।

ङ) "मसीह हम में" और "हम मसीह में" की बाइबल आधारित अवधारणाओं की घनिष्ठता पर विचार करें।

च) इफि. ५:३१, ३२ पर विचार करें। विवाह **संबंध, संबंध** के उस प्रकार की छाया है जो मसीह और कलीसिया के बीच उपस्थित होनी चाहिए।

छ) हमें यीशु के साथ प्रेम संबंध रखना है। इसमें दिखावटी कुछ भी नहीं है। यीशु के साथ हमारा संबंध घनिष्ठ होना चाहिए।

२. परमेश्वर के साथ घनिष्ठता बनाए रखना।

क. प्रका. २:४ में, इफिसुस की कलीसिया ने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया था। इसका तात्पर्य यह है कि एक समय में, वे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ थे।

ख. यीशु के साथ हमारे सम्बन्ध को पहले प्रेम के रोमांस की आवश्यकता है (भज. ७७:६)।

ग. यह रोमांस घनिष्ठता की ओर ले जाता है (भज. ६३:६)।

घ. यह घनिष्ठता गर्भाधान (जीवन की रचना) की ओर ले जाती है (यिर्म. २४:७)।

ङ. यह गर्भाधान जन्म और जीवन की ओर ले जाता है (दानि. ११:३२)।

१) इब्रानी शब्द जो उन लोगों के कार्यों का वर्णन करते हैं जो **अपने परमेश्वर को जानते** हैं, जीवन के शब्द हैं।

२) ये लोग बलवन्त और स्थायी होते हैं। वे कारनामे, साहसिक कार्य या बहादुरी के कार्य करने में सक्षम हैं।

टिप्पणियाँ

लेखक का उदाहरण:

आइए हम उस युवक के जोश और जीवन शक्ति के विषय में सोचें जो प्रेम में है।

एक शर्मीला, कमज़ोर, युवक एक कायर के रूप में अपना जीवन तब तक जी सकता है जब तक कि उसे किसी लड़की से प्रेम न हो जाए। यदि लड़की को कोई खतरा हो, तो कायर अचानक शेर में बदल सकता है।

जब हमारा यीशु के साथ घनिष्ठ संबंध नहीं होता है तो हम आत्मिक रूप से कमज़ोर होते हैं। शैतान हमें तब तक पीटता है जब तक हम यीशु के प्रेम में नहीं पड़ जाते। अचानक, हम शेरों के समान हो जाते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

ङ. गोपनीयता।

१. आपका सबसे अच्छा मित्र कौन है?

क. "सबसे अच्छे मित्र" के विचार को परिभाषित करने का एक तरीका गोपनीयता के संदर्भ में सोचना है।

१) एक सबसे अच्छा मित्र वह व्यक्ति होता है जो आपके रहस्यों को जानता है। वह व्यक्ति आपके जीवन के व्यक्तिगत विवरण को जानता है।

२) वह आपके विषय में किसी अन्य से अधिक जानता है, क्योंकि वह किसी अन्य की तुलना में आपके साथ अधिक समय बिताता है, और क्योंकि आप उसे अपने रहस्य बताते हैं।

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

गोपनीयता के संबंध में निम्नलिखित पदों पर विचार करें:

मत्ती ६:६ (प्रार्थना में गोपनीयता)

मत्ती ६:१७, १८ (उपवास में गोपनीयता)

मत्ती ६:३, ४ (देने में गोपनीयता)

ख. परमेश्वर आपके सबसे अच्छा मित्र बनना चाहते हैं! वह गोपनीयता के माध्यम से आपके साथ घनिष्ठ संबंध बनाना चाहते हैं। आपके और परमेश्वर के बीच एक जोड़ है जो तब बनता है और मजबूत होता है जब आप उनके साथ अपने रहस्य बाँटते हैं (जब केवल आप और वह जानते हैं)।

२. एक "एकांत स्थान" या "गुप्त स्थान" या "निजी स्थान" की आवश्यकता।

क. नए नियम में हम एक से अधिक बार पढ़ते हैं कि यीशु प्रार्थना करने के लिए एक "एकान्त स्थान" में गए थे (उदाहरण के लिए, मर. १:३५ देखें)।

ख. प्रभु को निजी तौर पर (या गुप्त रूप से) खोजने के लिए समय होना (ध्यान दें कि मर. १:३५ में यीशु सुबह-सुबह चले गए) और एक स्थान होना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार का आयोजन परमेश्वर द्वारा इच्छित घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

चर्चा विषय

उस समय और घटनाओं पर चर्चा करें जब परमेश्वर ने "एकांत या गुप्त स्थान" पर परमेश्वर से मिलते समय स्वयं को आप पर प्रकट किया है।

च. महत्वता।

१. यीशु आपसे किसी अन्य चीज से अधिक क्या चाहते हैं? आज्ञाकारिता? ईमानदारी? विश्वास? अच्छे काम?

क. नहीं! इस सभी चीजों से अधिक महत्वपूर्ण कुछ है। आज्ञाकारिता से अधिक महत्वपूर्ण? हाँ, क्योंकि आज्ञाकारिता किसी अन्य चीज़ पर निर्भर करती है। वह परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध की मजबूती पर निर्भर करती है।

टिप्पणियाँ

ख. किसी भी अन्य चीज से अधिक, परमेश्वर आपका समय चाहते हैं। वह आपके साथ समय बिताना चाहते हैं। वह आपका प्रेम चाहते हैं (मत्ती २२:३७)।

१) प्रेम आज्ञाकारिता के द्वारा दर्शाया जाता है (यूह. १४:१५)।

२) हालाँकि, प्रेम परमेश्वर के साथ बिताए गए समय के माध्यम से विकसित होता है।

२. हमें जिस चीज की आवश्यकता है, वह है मरियम का रवैया थोड़ा अधिक और मार्था का रवैया थोड़ा कम!

क. लूका १०:४१, ४२ का अध्ययन करें।

१) हमारे जीवन की सादगी परमेश्वर को जानने में मिलती है।

२) यीशु कैसे कह सकते हैं कि केवल एक ही चीज़ आवश्यक थी (उनके साथ समय बिताने के संदर्भ में)? क्योंकि यीशु ने यूह. १५:५ की वास्तविकता और गला. २:२० के तात्पर्यों को समझा।

क) यीशु के साथ संबंध इस मायने में आवश्यक है कि बाकी सब कुछ इस पर आधारित है।

ख) बाकी सब कुछ हमारे अन्दर मसीह पर आधारित है, और हमारे अन्दर मसीह उनके साथ बिताए गए समय पर आधारित है।

लेखक का उदाहरण:

हाल ही में एक विवाहित व्यक्ति अपनी नई पत्नी को प्रसन्न करने के लिए बहुत कुछ चाहता था। उसने दो नौकरियाँ की ताकि वह उसके लिए सबसे अच्छा घर, सबसे अच्छे कपड़े और कुछ और जो वह चाहे खरीद सके। उसके पास उसके साथ बिताने के लिए अधिक समय नहीं था, परन्तु उसने सोचा कि भविष्य में आर्थिक रूप से स्थिर होने के पश्चात अधिक समय होगा। कुछ वर्ष पश्चात उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई। उसने उसे अधिक पैसों या अधिक भौतिक चीजों के लिए नहीं छोड़ा। वह एक ऐसे आदमी के लिए चली गई जो उसके साथ समय बिताए।

हम भी, अक्सर उन कामों में इतने व्यस्त रहते हैं जो हम परमेश्वर के लिए कर रहे हैं और हम उनके साथ समय बिताना भूल जाते हैं। त्रासदी यह है कि परमेश्वर का हृदय हमारे साथ समय बिताने की इच्छा से धड़कता है। उनकी सबसे बड़ी इच्छा हमारे साथ एक घनिष्ठ और स्थिर संबंध रखना है।

टिप्पणियाँ

अपना उदाहरण लिखें:

ख. परमेश्वर को इसमें इतनी दिलचस्पी नहीं है कि हम उनके लिए कुछ करें, जितनी कि उन्हें उसमें है कि वह हमारे द्वारा कुछ करे। उनके लिए हमारे द्वारा कुछ करने के लिए हमें उनके साथ संबंध में होना आवश्यक है।

३. १६वीं शताब्दी के महान जर्मन धर्मशास्त्री मार्टिन लूथर ने परमेश्वर के साथ संबंध के महत्व को समझा। मार्टिन लूथर को एक दिन में जितना अधिक काम करना होता था, वह सुबह में उतनी ही देर तक प्रार्थना करता था। उसने कहा, "मेरे पास करने के लिए इतना कुछ है कि मुझे प्रत्येक दिन के पहले तीन घंटे प्रार्थना में व्यतीत करने चाहिये।"[४]

४. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक भोजन आवश्यक है। आत्मिक स्वास्थ्य के लिए आत्मिक भोजन आवश्यक है।

क. खाना बनाने का मन न होने पर भी क्या आप अपने लिए खाना बनाएंगे? अधिकांश लोग यह कहकर उत्तर देंगे, "चाहे आपका खाना पकाने का मन हो या न हो, भोजन तो आवश्यक ही है।"

ख. क्या आप परमेश्वर के साथ समय बिताएंगे, भले ही आपका मन न हो?

१) हमारा उत्तर वही होना चाहिए जो ऊपर दिया गया है।

२) अय्यूब २३:१२ के शब्दों पर ध्यान दें।

ग. मसीही के लिए परमेश्वर की ओर ताकना सांस लेने जैसा होना चाहिए। जिस प्रकार सांस वायु की उपस्थिति के लिए भौतिक जीवन की प्रतिक्रिया है, उसी प्रकार प्रार्थना को परमेश्वर की उपस्थिति के लिए आत्मिक जीवन की प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ

५. मर. ३:१४ में, यीशु ने १२ प्रेरितों को नियुक्त किया। प्राथमिकता के क्रम पर विचार करें जिसे यीशु ने उन्हें नियुक्त करने के उद्देश्य से दिया था:

   क. पहला: **उनके साथ होना।**

   ख. दूसरा: प्रचार करना।

   ग. तीसरा: दुष्ट आत्माओं को निकालना।

६. हमें यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि मसीह के चेलों ने अपने गुरु से कभी नहीं पूछा कि प्रचार कैसे करें, या कलीसिया के विकास के लिए पाँच कदम क्या हैं। उन्होंने उनसे पूछा कि प्रार्थना कैसे करें!

चर्चा विषय

उस समस्या पर चर्चा करें जिसका कुछ सेवकों को परमेश्वर की सेवा में इतना व्यस्त होने के कारण सामना करना पड़ता है कि वह परमेश्वर के साथ समय बिताने में सक्षम नहीं हैं। क्या यह आपके लिए सच है? क्या आप बदलाव करने के लिए तैयार हैं?

छ. अधीनता।

१. सम्बन्ध का आरम्भ अधीनता या समर्पण से होता है। कीमत या लागत अधिक होती है।

   क. परमेश्वर हमारे साथ इतनी अधिक साझेदारी नहीं चाहते हैं।

   ख. वह हम पर स्वामित्व चाहते हैं।

२. समर्पण के इस कृत्य का परिणाम निःस्वार्थ भाव से होता है।

   क. निःस्वार्थता का काफी संबंध परमेश्वर को जानने से है।

   ख. पहले के अध्ययन "परमेश्वर की सदृशता" की समीक्षा करें।

टिप्पणियाँ

३. यीशु को जानना क्रूस को जानना है, यह मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ना है।

क. लियोनार्ड रेवेनहिल ने इन शब्दों की पेशकश की है:

"जो व्यक्ति स्वयं के लिए मर गए उनकी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है और उनके पास ईर्ष्या करने के लिए कुछ भी नहीं है। उनके पास लड़ने के लिए कुछ भी नहीं है। उनके पास कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे वह अपना कहते हैं, और इसलिए चिंता करने की कोई बात ही नहीं है। उनके पास कुछ सही नहीं है, इसलिए, वह किसी भी प्रकार का गलत नहीं भुगत सकते। वह पहले ही मर चुके हैं, इसलिए कोई उन्हें मार नहीं सकते।"[५]

ख. सारांश: एक व्यक्ति जो स्वयं के लिए मर गए उन्हें अपमानित नहीं किया जा सकता क्योंकि उन में बचाव के लिए कोई आत्म नहीं बचा है। आप एक मरे हुए व्यक्ति को नहीं मार सकते।

४. संबंध अनिवार्य रूप से पदों का तात्पर्य है। परमेश्वर के साथ अपने संबंध में विश्वासी की सही स्थिति अधीनता या समर्पण की स्थिति है।

चर्चा विषय

एक अगुवे के रूप में, क्या आप यह महसूस करते हुए संघर्ष करते हैं कि आप जिस सेवकाई का संचालन कर रहे हैं वह आपकी है या आपकी होने के लिए है? सही दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए कि हम परमेश्वर के हैं और ऐसे ही हमारी सेवकाई भी है?

ज. निष्कर्ष।

१. हर क्षण **परमेश्वर पर निर्भरता का संकट** है क्योंकि हमें हर क्षण परमेश्वर की आवश्यकता है। इस प्रकार, हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम हर क्षण उसके साथ संबंध में बिताएं।

२. हमें होशे ६:३ के शब्दों को अपने उद्देश्य का व्यक्तिगत कथन बनाना चाहिए: "आओ, हम ज्ञान ढूँढें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें।"

परमेश्वर को जानना: भाग II

टिप्पणियाँ

३. इस पाठ्यक्रम के अंत में प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित चार कार्य करने के लिए चुनौती दें:

क. प्रभु के साथ निश्चित समय बिताने के लिए **कल** से आरम्भ करने का निर्णय **अभी** लें। विशिष्ट होना।

१) आप क्या करेंगे? कब?

२) परमेश्वर को जानने की चार प्राथमिक क्रियाओं और परमेश्वर को जानने में अनुशासन की समीक्षा करें।

३) प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको आपकी योजनाओं में अनुशासित बनने में सक्षम बनाएँ।

ख. कल परमेश्वर के साथ निरंतर संगति में रहने का प्रयास करने का निर्णय लें। पवित्र आत्मा से कहें कि वह आपको परमेश्वर की उपस्थिति को स्मरण दिलाएं और आपको अपने सभी तरीकों में उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित करें।

ग. अपने जीवन में उन बाधाओं पर विचार करें जो परमेश्वर के साथ आपके संबंध में रूकावट उत्पन्न कर सकती हैं।

१) भौतिक बाधाएँ।

२) मानसिक बाधाएँ।

३) भावनात्मक बाधाएँ।

४) आत्मिक बाधाएँ।

क) इन बाधाओं को नष्ट करने के लिए एक रणनीति तैयार करें।

ख) पवित्र आत्मा से आपको ऐसा करने की सामर्थ देने और अन्य बाधाओं को प्रकट करने के लिए कहें।

घ. अपने जीवन में बेदारी के लिए प्रार्थना करें।

१) परमेश्वर से आपके हृदय को उनके प्रति उत्तेजित करने के लिए कहें।

२) उनसे माँगे कि वह आपको उन्हें खोजने के लिए भूख और प्यास दें।

३) स्मरण रखें, परमेश्वर सभी अच्छी चीजों के स्रोत हैं। उन्हें खोजने की आपकी अपनी इच्छा भी उन्हीं से आती है। उनसे और अधिक के लिए माँगे!

टिप्पणियाँ

परमेश्वर को जानना II: अंतिम टिप्पणियाँ

[1]प्लेटो, माइकल पी. ग्रीन, एड. बाइबल आधारित प्रचार के लिए उदाहरण (ग्रैंड रैपिड्स, एमआई: बेकर बुक हाउस, १९८९) पृ. १६९

[2]अरस्तू, माइकल पी. ग्रीन, एड. बाइबल आधारित प्रचार के लिए उदाहरण (ग्रैंड रैपिड्स, एमआई: बेकर बुक हाउस, १९८९) पृ. १६९

[3]भाई लॉरेंस, परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास (उहरिक्सविले, ओहियो: बारबोर एंड कंपनी, १९९३), पृ. ५४

[4]मार्टिन लूथर, माइकल पी. ग्रीन, एड. बाइबल आधारित प्रचार के लिए उदाहरण (ग्रैंड रैपिड्स, एमआई: बेकर बुक हाउस, १९८९) पृ. २७७

[5]लियोनार्ड रेवेनहिल, जैसा कि डिक ईस्टमैन की "प्रार्थना संगोष्ठी," १९८६ में उद्धृत किया गया था।